International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
www.ijesrr.org February- 2014, Volume-1, Issue-1 Email- editor@ijesrr.org

"किशोरों की सृजनात्मकता पर अभिभावकों की शिक्षा का प्रभाव"

Dr. Shweta Sharma
Guest Lecturer
Department of Home Science
CCS University, Meerut

Dr. Kamlesh Sharma
(Ritt.) Prof.
Dr. B.S. Ambedkar National Institute of Social Science
Mahu, Indore, M.P.

सार. *सृजनात्मकता, वह क्षमता है, जिससे व्यक्ति कुछ नवीन वस्तुओं रचनाओं अथवा विचारों को उत्पन्न करता है। किशोरों के उज्ज्वल भविष्य, सुखद जीवन एंव उन्नति के लिए सृजनात्मकता अत्यन्त आवश्यक है। प्रस्तुत अध्ययन किशोरों की सृजनात्मकता पर अभिभावकों की शिक्षा का प्रभाव देखने हेतु किया गया। अध्ययन में समग्र के अन्तर्गत इन्दौर शहर के 500 किशोरों को सम्मिलित किया गया। प्रदत्तों के संकलन हेतु प्रश्नावली एवं बी0 के0 पासी द्वारा निर्मित, ''पासी का सृजनात्मकता परीक्षण'' प्रयुक्त किया गया। अध्ययन में प्रदत्तों के सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु काई वर्ग परीक्षण प्रयुक्त किया गया। अध्ययन में किशोरों की सृजनात्मकता एवं अभिभावकों की शिक्षा के मध्य सम्बंध पाया गया।*

प्रस्तावना

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् ही मनोवैज्ञानिकों का आकर्षण उस अद्भुत योग्यता एवं शक्ति के सम्बन्ध में शोध करने के लिए हुआ, जो व्यक्ति को नये आविष्कार करने, जटिल समस्याओं का समाधान ढूंढने तथा जीवन को सुखमय बनाने के लिए सहयोग प्रदान करती है। इस अद्भुत व मनोहरी योग्यता को ही 'सृजनात्मकता' की संज्ञा दी जाती है। सृजनात्मकता का मापन स्पीयरमैन (1930) के अध्ययनों से प्रारम्भ हुआ परन्तु आधुनिक काल में इसके मापन का श्रेय टोरेन्स, टेलर एवं गिलफोर्ड आदि मनोवैज्ञानिकों को है। डीर्हान एवं हेविंगहर्स्ट के अनुसार–

''सृजनात्मकता वह गुण है, जो नवीन तथा वांछित वस्तु के उत्पादन की ओर आकृष्ट करे। यह नवीन उत्पाद सम्पूर्ण समाज अथवा केवल उत्पादक व्यक्ति के लिए नवीन हो सकता है।''

गिलफोर्ड (1967) के अनुसार सृजनात्मक शिक्षा द्वारा हम किशोरों को स्वचालित संसाधनयुक्त आत्मविश्वास से पूर्ण व्यक्तियों में परिवर्तित कर सकते हैं जोकि विभिन्न प्रकार की व्यैक्तिक व अर्न्तव्यैक्तिक समस्याओं का सामना कर सकते हैं; क्योंकि वह आत्मविश्वास से पूर्ण होने के कारण अधिक सृजनशील होगा। यदि सम्पूर्ण विश्व में सृजनशील व्यक्तियों की संख्या बढ़ जायेगी, तो सभी जगह शान्तिपूर्ण वातावरण होगा। स्वधाना (1990) के अनुसार अभिभावकों की शिक्षा व सृजनात्मकता में धनात्मक सम्बन्ध होता है अर्थात् शिक्षित अभिभावक अधिक उत्तम प्रकार से सृजनात्मक शिक्षा प्रदान कर सकते हैं।

अतः इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि सृजनात्मकता किसी भी शिक्षा को पूर्णता प्रदान करती है व मानव जाति की गम्भीर समस्याओं का निदान भी प्रस्तुत करती है। सृजनात्मकता एक ऐसी उच्च मानसिक योग्यता है, जिस पर सम्पूर्ण राष्ट्र व व्यक्ति की प्रगति निर्भर करती है।

शोध प्रविधि

उद्देश्य :

(1) किशोरों की सृजनात्मकता का उनकी माताओं की शिक्षा के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करना।
(2) किशोरों की सृजनात्मकता का उनके पिताओं की शिक्षा के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करना।

उपकल्पना :

(1) किशोरों की सृजनात्मकता का उनकी माताओं की शिक्षा के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं होगा।
(2) किशोरों की सृजनात्मकता का उनके पिताओं की शिक्षा के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं होगा।

समग्र एवं निदर्शन पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन में इन्दौर शहर के किशोरों को सम्मिलित किया गया है। समग्र के अन्तर्गत 250 किशोर लड़कों व 250 किशोर लड़कियों, कुल 500 को इकाई के रूप में सम्मिलित किया गया। सोद्देश्य (उद्देश्यपूर्ण) निदर्शन पद्धति द्वारा समग्र का चुनाव इन्दौर शहर के विभिन्न विद्यालयों से किया गया।

उपकरण एवं सांख्यिकीय विश्लेषण

प्रदत्तों का संकलन प्रश्नावली एवं बी0 के0 पासी द्वारा निर्मित पासी का सृजनात्मक परीक्षण (मनोवैज्ञानिक परीक्षण) ;च्ज्ब्द्ध प्रयुक्त किया गया। सांख्यकीय विश्लेषण हेतु काई–वर्ग परीक्षण ;ग^{2}द्ध का प्रयोग किया गया।

किशोरों की सृजनात्मकता का उनके पालकों की शिक्षा के मध्य सम्बन्ध–

सारणी–1

किशोरों की सृजनात्मकता एवं उनकी माताओं की शिक्षा के मध्य सम्बन्ध

श्रेणियाँ		माताओं की शिक्षा			
		अशिक्षित एवं कम शिक्षित	मध्यम शिक्षित	उच्च एवं व्यवसायिक शिक्षित	सार्थकता स्तर
सृजनात्मकता	निम्न	52	52	26	0.01 स्तर पर सार्थक
	मध्यम	86	83	74	
	उच्च	9	33	85	

काई वर्ग मूल्य = 76.957, मुक्तांश = 4

उक्त सारणी–1, किशोरों की सृजनात्मकता एवं उनकी माताओं की शिक्षा के मध्य सम्बन्ध को प्रदर्शित करती है।

सारणी से स्पष्ट होता है कि निम्न सृजनात्मकता के अन्तर्गत 52 किशोर अशिक्षित एवं कम शिक्षित माताओं के, 52 किशोर मध्यम शिक्षित माताओं के तथा 26 किशोर उच्च एवं व्यवसायिक शिक्षित माताओं के पाये गये। मध्यम सृजनात्मकता के अन्तर्गत 86 किशोर अशिक्षित एवं कम शिक्षित माताओं के, 83 किशोर मध्यम शिक्षित माताओं के तथा 74 किशोर उच्च एवं व्यवसायिक शिक्षित माताओं के पाये गये। उच्च सृजनात्मकता के अन्तर्गत 9 किशोर अशिक्षित एवं कम शिक्षित माताओं के, 33 किशोर मध्यम शिक्षित माताओं के तथा 85 किशोर उच्च एवं व्यवसायिक शिक्षित माताओं के पाये गये।

साँख्यिकीय गणना में, 4 मुक्तांश पर काई वर्ग मूल्य = 76.957 पाया गया जोकि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक सिद्ध हुआ। इससे स्पष्ट होता है कि किशोरों की सृजनात्मकता एवं उनकी माताओं की शिक्षा में सम्बन्ध है। अन्य शब्दों में, अशिक्षित एवं कम शिक्षित तथा मध्यम शिक्षित माताओं के किशोरों की अपेक्षा उच्च एवं व्यवसायिक शिक्षित माताओं के किशोर अधिक सृजनात्मक होते हैं।

पूर्व में किये गये अध्ययन में, स्वथाना (1990) ने सृजनात्मकता एवं माताओं की शिक्षा के मध्य धनात्मक सम्बन्ध पाया।

प्रस्तुत अध्ययन स्वथाना (1990) के शोध अध्ययन की पुष्टि करता है।

सारणी–2

किशोरों की सृजनात्मकता एवं उनके पिताओं की शिक्षा के मध्य सम्बन्ध

श्रेणियाँ		पिताओं की शिक्षा			
		अशिक्षित एवं कम शिक्षित	मध्यम शिक्षित	उच्च एवं व्यवसायिक शिक्षित	सार्थकता स्तर
सृजनात्मकता	निम्न	52	54	24	0.01 स्तर पर सार्थक
	मध्यम	87	69	87	
	उच्च	10	31	86	

काई वर्ग मूल्य = 76.082, मुक्तांश = 4

उक्त सारणी–2, किशोरों की सृजनात्मकता एवं उनके पिताओं की शिक्षा के मध्य सम्बन्ध को प्रदर्शित करता है।

सारणी से स्पष्ट होता है कि निम्न सृजनात्मकता के अन्तर्गत 52 किशोर अशिक्षित एवं कम शिक्षित पिताओं के, 54 किशोर मध्यम शिक्षित पिताओं के तथा 24 किशोर उच्च एवं व्यवसायिक शिक्षित पिताओं के पाये गये। मध्यम सृजनात्मकता के अन्तर्गत 87 किशोर अशिक्षित एवं कम शिक्षित पिताओं के, 69 किशोर मध्यम शिक्षित पिताओं के तथा 87 किशोर उच्च एवं व्यवसायिक शिक्षित पिताओं के पाये गये। उच्च सृजनात्मकता के अन्तर्गत 10 किशोर अशिक्षित एवं कम शिक्षित पिताओं के, 31 किशोर मध्यम शिक्षित पिताओं के तथा 86 किशोर उच्च एवं व्यवसायिक शिक्षित पिताओं के पाये गये।

साँख्यिकीय गणना में, 4 मुक्तांश पर काई वर्ग मूल्य = 76.082 पाया गया जोकि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक सिद्ध हुआ। इससे स्पष्ट होता है कि किशोरों की सृजनात्मकता एवं उनके पिताओं की शिक्षा में सम्बन्ध है। अन्य शब्दों में, अशिक्षित एवं कम शिक्षित तथा मध्यम शिक्षित पिताओं के किशोरों की अपेक्षा उच्च एवं व्यवसायिक शिक्षित पिताओं के किशोर अधिक सृजनात्मक होते हैं। पूर्व में किये गये अध्ययन में, स्वथाना (1990) तथा राबिन्सन (2002) ने सृजनात्मकता एवं माताओं की शिक्षा के मध्य धनात्मक सम्बन्ध पाया।

प्रस्तुत अध्ययन स्वथाना (1990) तथा राबिन्सन (2002) के शोध अध्ययन की पुष्टि करता है।

REFERENCES

1. Robinson, R. (2002) : "Fostering reflective and Creative Thinking", The Educational Review, 45(8), 149-150.
2. Swhthana, Korishnan S. (1990) : "A study of creativity in relation to some related variables", Survey of Educational Research, p. 1066.
3. Van, Fange Eugene K. (1950) : "Professional Creativity", Prentice-Hall Inc., New Jersey, p. 70.
4. Banon, Frank (1969) : "Creative Person & Creative Process", Holt, Rinehart & Winston Inc., New York.